काम और

ज़्यादा काम

टॉम एक ऐसे देश में रहता है जहां वो और उसके माता-पिता बहुत सारे काम करते हैं, जिसमें सब्जियां उगाने से लेकर ऊन बुनने से लेकर कीलें बनाने तक का काम शामिल है.

"शहर में ऐसा क्या है?" टॉम पूछता है.

"हर जगह एक ही जैसा ही होता है," टॉम के माँ और पिता उसे बताते हैं, "बस काम और अधिक काम."

टॉम इस बात को खुद परखना चाहता है. टॉम एक गठरी में रोटी और पनीर रखकर अपने घर से निकलता है. उसकी जिज्ञासा उसे गांव से शहर और वहां से समुद्र द्वारा चीन, भारत और श्रीलंका में दूर-दराज़ के बंदरगाहों तक ले जाती है. फिर टॉम जिस स्थान पर जाता है, वो सभी प्रकार के काम और सभी प्रकार के अचरजों का पता लगाता है.

काम और ज़्यादा काम

टॉम सुबह से चुकंदर के खेतों की निंदाई कर रहा था.

हर बार जब कोई धूल धूसरित यात्री या कोई बैलगाड़ी उसके सामने से गुजरती, तो टॉम यह पूछने के लिए भागता था, "आप कहाँ जा रहे हैं, सर?" या "आप कहाँ जा रही हैं, मैडम?"

"मैं शहर में अपने सुअर बेचने जा रहा हूँ."

"मुझे बकरी खरीदने के लिए शहर जाना है."

"मुझे शहर में यह मुर्गी बेंचकर एक बत्तख खरीदनी है."

टॉम उन्हें देखता ही रहता था. फिर कुछ देर में वे सभी लोग पहाड़ी के पीछे कहीं गायब हो जाते थे.

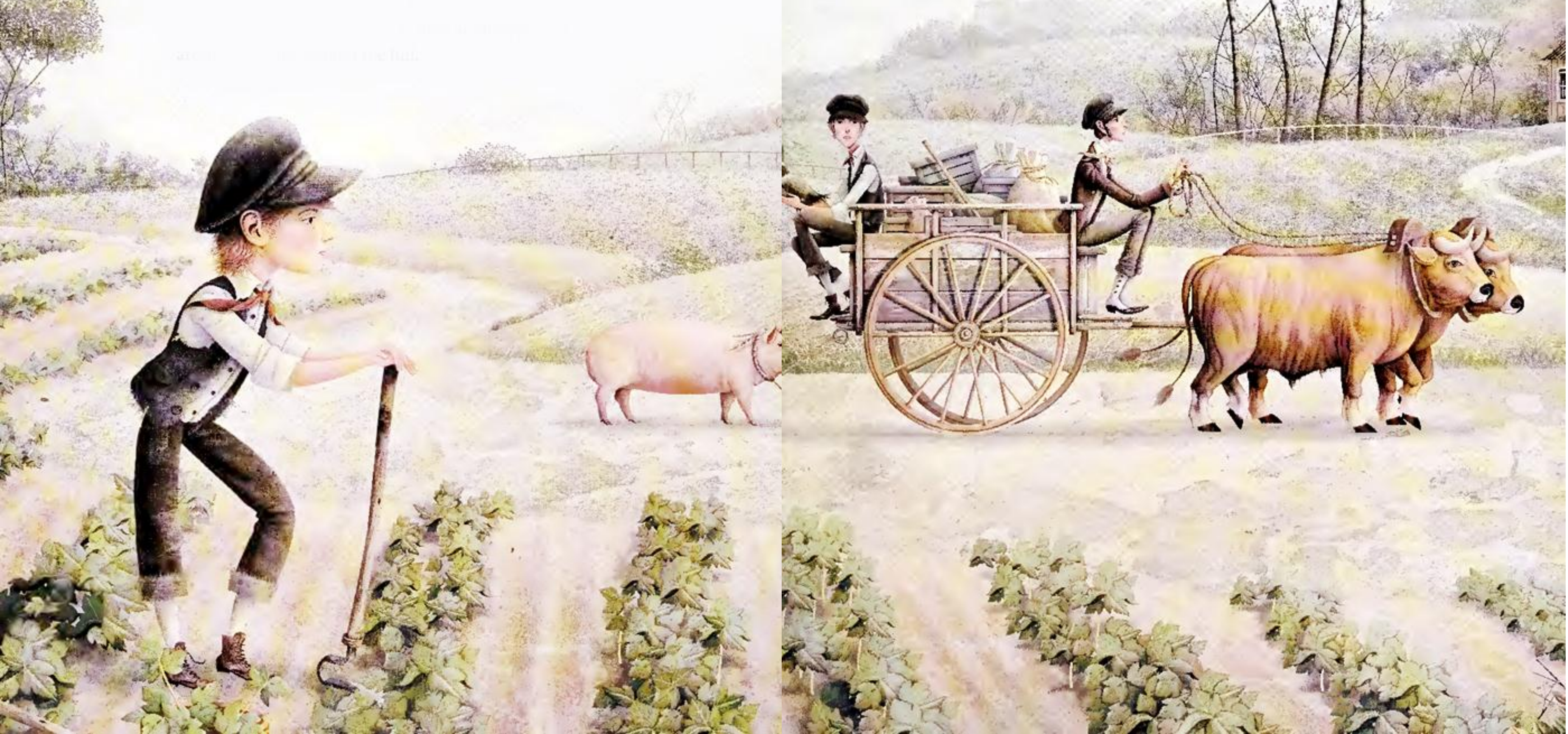

"शहर में क्या होता है?" टॉम ने अपनी मां से पूछा.

"हर जगह एक जैसा ही होता होगा," माँ ने कहा. माँ सूत कात रही थीं और उन्होंने अपनी आँखों को घूमने वाले पहिए से ऊपर नहीं उठाया. "काम और अधिक काम."

"मुझे शहर देखना बहुत अच्छा लगेगा," टॉम ने अपने पिता से कहा.

"उससे कोई फायदा नहीं होगा," उसके पिता ने कहा. पिताजी निहाई पर लोहा ठोक-ठोककर कीलें बना रहे थे. उन्होंने अपने काम से आँख तक नहीं उठाई.
"वहाँ काम और अधिक काम के अलावा और कुछ नहीं होगा."

फिर भी टॉम ने शहर जाने का अपना मन बनाया.

अगले बाजार वाले दिन, सुबह के समय टॉम ने एक गठरी में एक पाव रोटी और पनीर का टुकड़ा बांधा और फिर उसने अपनी मां और पिता को चूमा. उसके बाद वो सड़क पर आगे बढ़ा.

कुछ देर बाद उसे बाजार जाती घास से भरी हुई गाड़ी पर मुफ्त सवारी मिली. जल्द ही वे एक चौराहे पर पहुंचे और फिर वे एक चर्च, एक लोहार की वर्कशॉप और एक चक्की के सामने से गुजरे. रास्ते में भेड़ें खेतों में चर रही थीं और फेरीवाले अपने माल को बेंचने के लिए आवाज़ें लगा रहे थे.

"मेरे बर्तन खरीदो," एक छोटा लड़का चिल्ला रहा था. उसकी ऐड़ी के पास एक छोटा पिल्ला भूँक रहा था.

"केक खरीदो," पीला एप्रन पहने एक महिला गा रही थी.

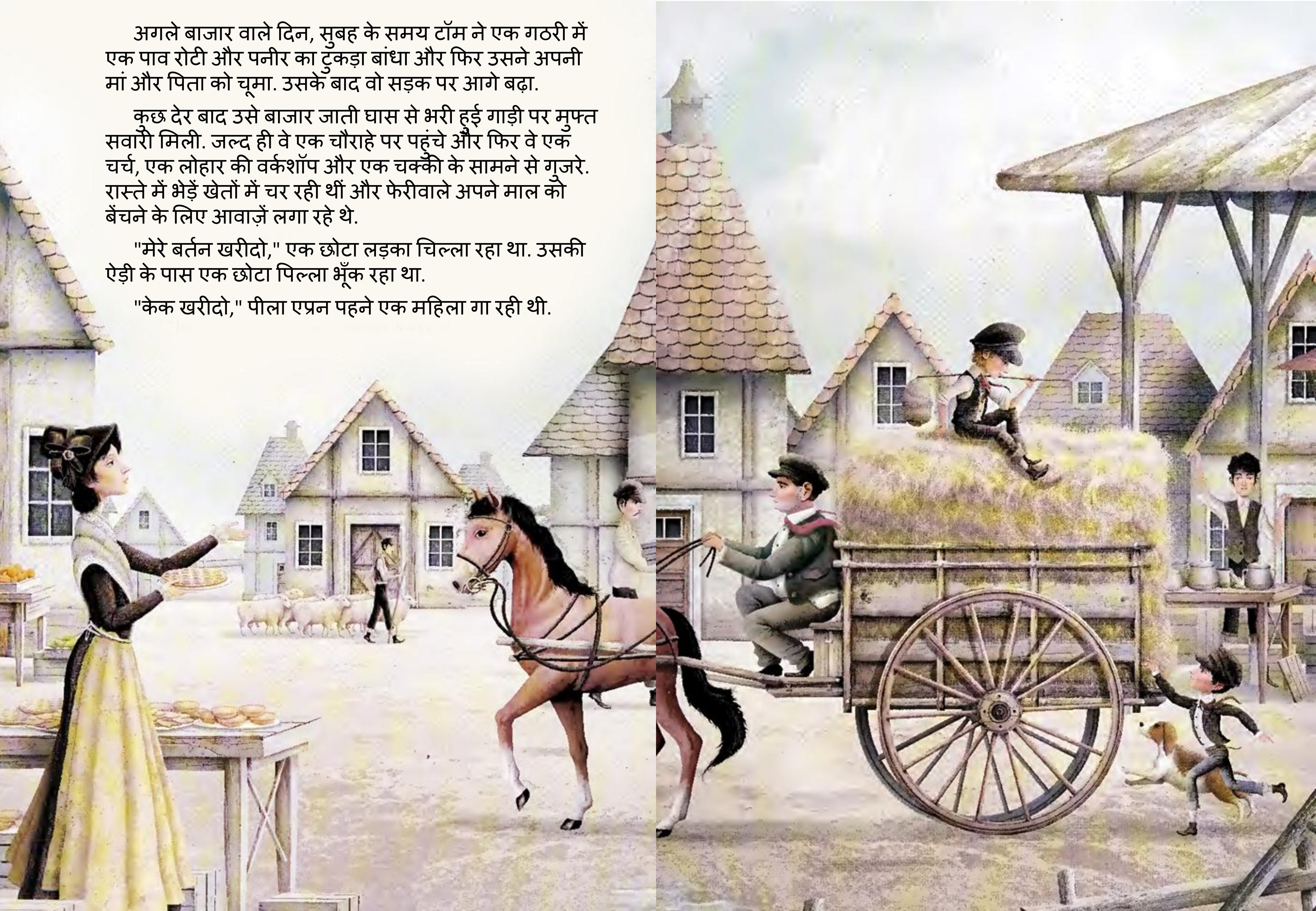

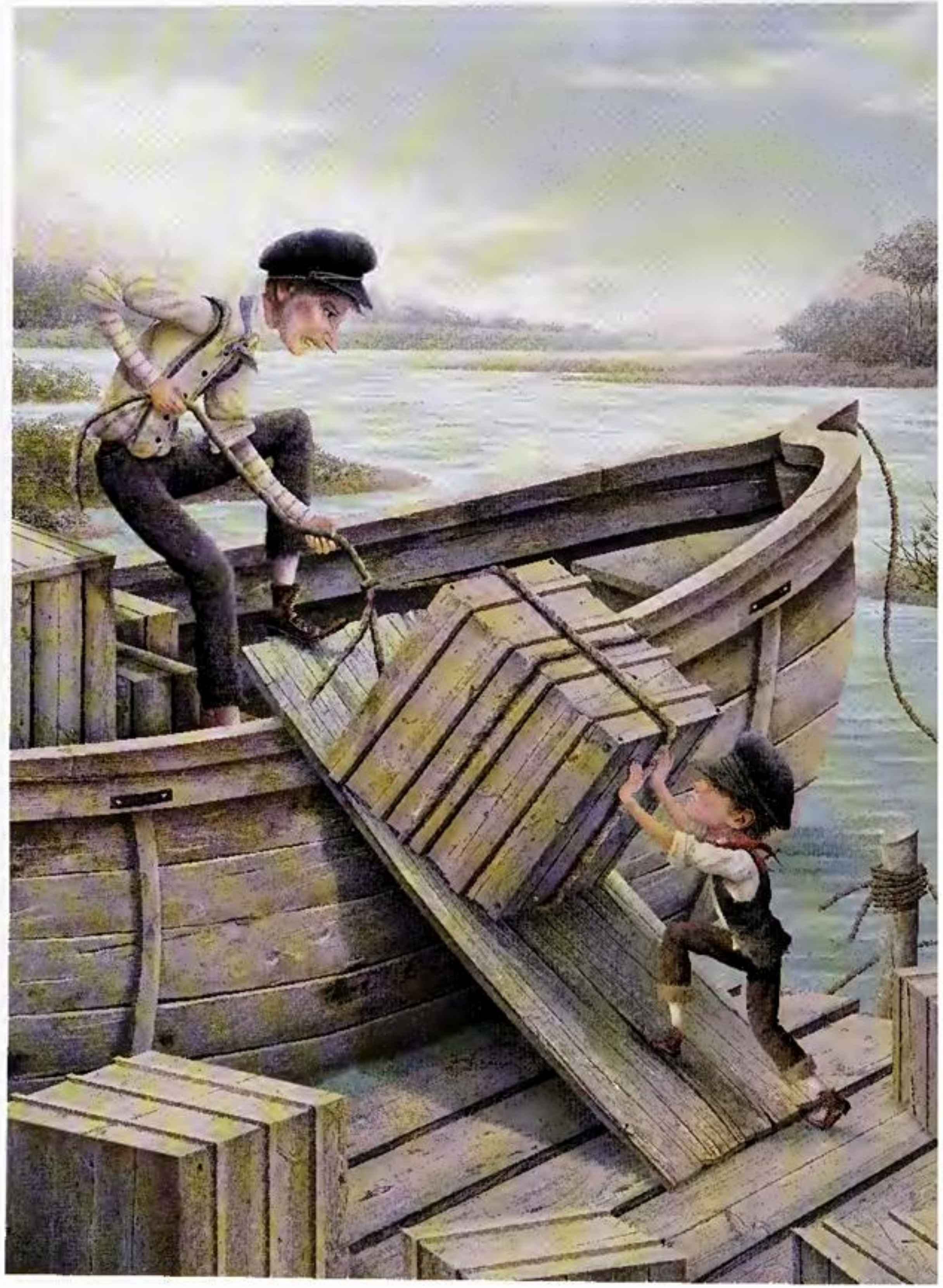

"अरे लड़के," एक आदमी ने टॉम को बुलाया और कहा. "ज़रा बजरे पर इन टोकरों के ढेर को रखने में मेरी मदद करो!"

दिन के अंत होने तक टॉम काम करते-करते थक गया, लेकिन वो बेहद खुश था. टॉम नदी के किनारे बजरे पर ही सो गया और उसने नाव वाले के साथ रात का खाना साझा किया.

"यह बजरा कहाँ जाएगा?" टॉम ने पूछा.

"वो शहर के अलावा और कहाँ जाएगा."

"शहर में क्या अलग होगा?"

"शहर भी अन्य जगहों जैसा ही होता है. वहां भी लोगों को खूब काम करना पड़ता है."

फिर टॉम ने सोचा कि वो शहर जाएगा.